व्यंजन संधि के नियम –

③ यदि सम् उपसर्ग के बाद अन्तःस्थ वर्ण (य, र, ल, व) या ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह) में से कोई एक व्यंजन वर्ण आये तो सम् उपसर्ग के म् का अनुस्वार चिह्न (ं) में परिवर्तन हो जाता है –

2. संयोग, संरक्षण, संलग्न, संवाद

1. सम् + योग, सम् + रक्षण, सम् + लग्न, सम् + वाद

म् + य   म् + र   म् + ल   म् + व

संशय, संसार, संहार

सम् + शय, सम् + सार, सम् + हार

म् + श, म् + स, म् + ह

④ यदि सम् उपसर्ग (शब्दांश) के बाद म व्यंजन या म
से बना शब्द आये तो म का द्वित्व हो जाता है -

सम्मान, सम्मति, सम्मोहन

सम् + मान, सम् + मति, सम् + मोहन

म् + म, म् + म, म् + म

(i) स्वर रहित व्यंजन

(ii) स्वर सहित व्यंजन

⑤ यदि सम् उपसर्ग के बाद कृ क्रिया या कृ से बना शब्द प्रयोग हो तो दोनों के बीच में दन्त्य 'स्' आ जाता है-

संस्कृत, संस्कार, संस्कृति, संस्करण

सम् + कृत, सम् + कार, सम् + कृति, सम् + करण

म् + कृ   म् + क   म् + कृ   म् + क

⑥ यदि परि उपसर्ग के बाद कृ क्रिया या क से बना शब्द आये तो दोनों के बीच में मूर्धन्य ष आ जाता है-

परिष्कृत , परिष्कार , परिष्करण

परि + कृत → इ + कृ

परि + कार → इ + क

परि + करण → इ + क

⑦ यदि किसी स्वर वर्ण के बाद छ वर्ण आये तो दोनों के बीच में 'च्' आ जाता है-

अनुच्छेद, परिच्छेद, विच्छेद, वृक्षच्छाया

अनु + छेद   परि + छेद, वि + छेद, वृक्ष + छाया

उ + छ   इ + छ   इ + छ   अ + छ

शुद्ध वर्तनी –

A ✗ तरूद्धाया, B ✗ तरुद्धाया, C ✗ पितृद्धाया, D ✗ मातृद्धाया,

रू = र् + ऊ

(2) तरुच्छाया पितृच्छाया मातृच्छाया = शुद्ध वर्तनी

(1) तरु + छाया पितृ + छाया मातृ + छाया

उ + छ ऋ + छ ऋ + छ

④ यदि अ/आ स्वर को छोड़कर किसी स्वर के बाद दन्त्य 'स' आये तो दन्त्य 'स' का परिवर्तन मूर्धन्य 'ष' में हो जाता है –

स = दन्त्य

ष = मूर्धन्य

3. विषम, विषाद, अभिषेक

2. वि + षम वि + षाद अभि + षेक

1. वि + सम वि + साद अभि + सेक

इ + स इ + स इ + स

① ③ उद्धार , उद्धरण , पद्धति

② उद् + धार , उद् + धरण , पद् + धति

① उत् + हार , उत् + हरण , पत् + हति

त् + ह , त् + ह , त् + ह

98915 50539

नियम – यदि त् के बाद ह वर्ण आये तो त् का परिवर्तन द् तथा ह का परिवर्तन ध में हो जाता है।

A ✓ B ✓ C ✓ D

10. (3) सच्छास्त्र , उच्छ्वास , उच्छृंखलता कोई नहीं

(2) सच् + छास्त्र , उच् + छ्वास , उच् + छृंखलता

(1) सत् + शास्त्र , उत् + श्वास उत् + शृंखलता

त् + श त् + श त् + श्

नियम – यदि त् के बाद तालव्य 'श' आये तो त् का परिवर्तन च् तथा 'श' का परिवर्तन 'छ' में हो जाता है।

संधि के 5 सबसे बड़े अपवाद (ये नियम के खिलाफ चलते हैं)

अपवाद 1 :

अक्षौहिणी (अक्ष + ऊहिनी):

गुण संधि के नियम से 'अक्षोहिणी' होना चाहिए था, पर अपवाद के कारण यहाँ वृद्धि संधि (औ की मात्रा) होती है।

प्रौढ़ , अक्षौहिणी दन्तौष्ठ = गुण संधि

प्र + ऊढ़	अक्ष + ऊहिणी	दन्त + औष्ठ
अ + ऊ = औ	अ + ऊ = औ	अ + ओ = औ

संधि के 5 सबसे बड़े अपवाद (ये नियम के खिलाफ चलते हैं)

अपवाद 2 :

प्रौढ़ (प्र + ऊढ़):

गुण संधि के नियम से 'प्रोढ़' होना चाहिए था, पर अपवाद से यहाँ वृद्धि संधि (औ की मात्रा) होती है।

संधि के 5 सबसे बड़े अपवाद (ये नियम के खिलाफ चलते हैं)

अपवाद 3 :

सुखार्त (सुख + ऋत):

दीर्घ या गुण संधि के नियम के खिलाफ जाकर यहाँ वृद्धि स्वर संधि (आर् का उच्चारण) होती है।

HINDI BY ARUN SIR

संधि के 5 सबसे बड़े अपवाद (ये नियम के खिलाफ चलते हैं)

अपवाद 4 :

स्वांग (स्व + अंग) और स्वाधीन (स्व + अधीन):

इनमें 'स्व' (अपना) अर्थ होने के कारण 'सु' उपसर्ग नहीं लगता, इसलिए ये यण संधि नहीं बल्कि दीर्घ संधि के उदाहरण हैं।

संधि के 5 सबसे बड़े अपवाद (ये नियम के खिलाफ चलते हैं)

अपवाद 5 :

स्वैरिणी (स्व + इरिणी):

गुण संधि का नियम तोड़कर यहाँ वृद्धि संधि (ऐ की मात्रा) होती है।

संधि के सबसे जरूरी फंसाने वाले पॉइंट्स

विच्छेद में हलंत (्)

व्यंजन संधि को पहचानते समय हमेशा पहले शब्द के अंतिम वर्ण के नीचे हलंत (जैसे: उत् + लास = उल्लास) ज़रूर देखें।

'व' और 'य' से पहले आधा अक्षर

यदि 'य' या 'व' के ठीक पहले आधा अक्षर आए (जैसे: इत् + आदि = इत्यादि), तो वह हमेशा यण स्वर संधि होती है।

संधि के सबसे जरूरी फंसाने वाले पॉइंट्स

ऐ, औ, आय, आव का उच्चारण

यदि शब्द के बीच में इनका उच्चारण आए (जैसे: पवन, पावक, नयन), तो आँख बंद करके अयादि स्वर संधि लगाएं।

शिरोरेखा पर डबल मात्रा (ै, ौ)

शब्द के ऊपर दो मात्राएँ दिखने पर (जैसे: सदैव, महाऔषध) वह हमेशा वृद्धि स्वर संधि होती है।

संधि के सबसे जरूरी फंसाने वाले पॉइंट्स

शिरोरेखा पर सिंगल मात्रा (ॆ, ो)

गुण संधि

शब्द के ऊपर एक मात्रा दिखने पर (जैसे: नरेंद्र, परोपकार) वह गुण स्वर संधि होती है।

अनुस्वार (ं) का नियम

ं = व्यंजन संधि

शब्द के ऊपर लगी बिंदी विच्छेद करते समय हमेशा हलंत वाले 'म्' में बदल जाती है (जैसे: संहार = सम् + हार)।

संधि के सबसे जरूरी फंसाने वाले पॉइंट्स

आधा 'श्, ष्, स' का विसर्ग बनना

यदि शब्द में आधा श, ष, स आए (जैसे: निश्चल, दुष्कर, नमस्ते), तो विच्छेद में वे विसर्ग (ः) में बदल जाते हैं (जैसे: निः + चल = निश्चल)।

THANK YOU